चरखा चलता नाहीं...

(कविवर पण्डितश्री भूधरदासजी)

चरखा चलता नाहीं (रे) चरखा हुआ पुराना (रे) ॥
पग खूँटे दो हालन लागे, उर मदरा[1] खखराना।
छीदी हुई पांखड़ी पांसू[2], फिरै नहीं मनमाना ॥1॥
रसना तकली ने बल खाया, सो अब कैसे खूटै।
शबद-सूत सूधा नहिं निकसे, घड़ी-घड़ी पल-पल टूटै ॥2॥
आयु मालका नहीं भरोसा, अंग चलाचल सारे।
रोज इलाज मरम्मत चाहे, वैद बाढ़ई हारे ॥3॥
नया चरखला[3] रंगा-चंगा, सबका चित्त चुरावै।
पलटा वरन गये गुन अगले, अब देखैं नहिं भावै ॥4॥
मोटा महीं[4] कातककर[5] भाई!, कर अपना सुरझेरा[6]।
अन्त आग में ईंधन होगा, 'भूधर' समझ सवेरा ॥5॥

तीर्थधाम मङ्गलायतन के पश्चिमभाग पर स्थापित, वैराग्यप्रेरक दृश्य

१. पहिये; २. छोटा चरखा; ३. चरखा; ४. पतला; ५. कातनेवाला; ६. सुलझन